फरीदाबाद
जागरण सिटी

कोर्स चुनने में बच्चों पर अपनी मर्जी न थोपें : प्रो.दिनेश

वाईएमसीए साइंस एंड टेक्नॉलोजी हरियाणा की उन चुनिंदा यूनिवर्सिटी में से एक है,जहां वैश्विक स्तर की शैक्षणिक सुविधाएं हैं। सीबीएसई के बारहवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम आने के बाद छात्रों को किस तरह अपने नए कोर्स व विषयों का चयन करना चाहिए। नेक की ए श्रेणी यूनिवर्सिटी वाईएमसीए में क्या खास कोर्स हैं। इन सवालों को लेकर यूनिवर्सिटी के कुलपति **प्रो.(डॉ.) दिनेश अग्रवाल** से दैनिक जागरण के मुख्य संवाददाता **बिजेंद्र बंसल** ने बातचीत की,उन्होंने इसका बेबाकी से जवाब दिया प्रस्तुत बातचीत के प्रमुख अंश :

● हरियाणा बोर्ड के बाद अब सीबीएसई ने भी बारहवीं कक्षा का परिणाम घोषित कर दिया है, छात्रों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

-मैं छात्रों से सिर्फ इतना ही कहूंगा कि वे अपनी रुचि के अनुसार कोर्स और उसके विषय चुनें। छात्र खुद निर्णय लें कि वे किस कोर्स में बेहतर कर सकते हैं। यदि वे एक से अधिक कोर्स में बेहतर कर सकते हैं तो फिर वे उन कोर्स कराने वाली शैक्षणिक संस्थाओं की शैक्षणिक ग्रेडिंग व संसाधनों की जानकारी लें। इसके लिए उन्हें कॅरियर काउंसलरों की भी मदद लेनी चाहिए।

● आमतौर पर बच्चों को अभिभावकों की मर्जी से कोर्स चुनते पड़ते हैं क्यों?

-मैं समझता हूं कि इसमें अभिभावकों को बच्चों की रुचि के अनुसार ही फैसला लेना चाहिए। अभिभावकों को देखना चाहिए कि बच्चे के कम या ज्यादा अंक आए हैं तो किस कारण से। उन कारणों की विवेचना करते हुए बच्चे के मित्र बनकर उसे कोर्स चुनने में सहयोग करना चाहिए न कि उस पर अपनी मर्जी थोपनी चाहिए। वैसे मैं यह भी मानता हूं कि अब ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चों की मर्जी के अनुसार ही कोर्स का चयन करवाते हैं।

● ज्यादातर छात्र व उनके अभिभावक अच्छी नौकरी वाले कोर्स ही चुनते हैं क्यों?

-यह हमारी सबकी मनोदशा बन चुकी रही है कि हम नौकरी को ध्यान में रखते हुए कोर्स चुनते रहे हैं। लेकिन अब छात्रों की सोच बदल रही हे। मैं आज ही सीबीएसई की इंडिया टॉपर छात्रा रक्षा गोपाल को टीवी पर सुन रहा था, उन्होंने कला संकाय में पढ़ाई करते हुए इंडिया टॉप किया है और अब उनकी इच्छा पॉलीटिकल साइंस आनर्स का कोर्स करने की है। वह इंजीनियर, सीए बनने की बजाए संभवतया एक बड़ी लेखक, प्रशासनिक अधिकारी या शिक्षक बनना चाहती हैं। हमें बच्चों को सिर्फ नौकरी के इर्द-गिर्द कोर्स चुनने की बजाए स्टार्टअप बिजनेस को ध्यान में रखते हुए भी कोर्स करने चाहिए। अभिभावकों को भी इसमें अपने बच्चों का सहयोग करना चाहिए।

● परंपरागत विषयों से अलग विषयों के बारे में छात्र क्यों नहीं सोच पाते?

-आप यह ठीक कह रहे हैं कि छात्र या उनके अभिभावक सिर्फ परंपरागत कोर्स में ही पढ़ाई करना चाहते हैं मगर अब बीए, बी.कॉम, बीएससी, इंजीनियरिंग के परंपरागत कोर्स से भी अलग काफी ऐसे कोर्स हैं जो छात्रों को पढ़ाई के अंतिम चरण में ही स्वावलंबी बना देते हैं। उदाहरण के तौर पर टूरिज्म क्षेत्र में काम करने के लिए यदि कोई छात्र पढ़ाई करता है तो उसके सामने स्वावलंबी होने के कई अवसर होंगे।

● वाईएमसीए यूनिवर्सिटी का कोई एक ऐसा कोर्स जिसे सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा हो?

-हमारी यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग व मैनजमेंट के सभी कोर्स हैं मगर इस समय बी.टेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग में एसी-रेफ्रीजरेटर का कोर्स सबसे बेहतर है। देश-विदेश की ज्यादातर एसी, रेफ्रीजरेटर की प्रमुख कंपनियों में वाईएमसीए से पढ़े छात्र अब सीईओ हैं। जिस छात्र ने बी.टेक मैकेनिकल करते हुए एसी-रेफ्रीजरेटर को अपना फोकस किया,उसे हाथों-हाथ नौकरी मिल रही हैं। पिछले सत्र में 47 बच्चों को विश्वस्तरीय एसी कंपनी ने हमारे यहां से नौकरी दी है।

● किसी भी शैक्षणिक संस्थान की जानकारी लेने के लिए उत्तम तरीका क्या मानते हैं?

-वैसे तो सभी शैक्षणिक संस्थानों के सभी कोर्स,फैकल्टी, शैक्षणिक संसाधनों व अन्य सुविधाओं की जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध होती है मगर मेरा छात्रों और उनके अभिभावकों को एक सुझाव है कि वे उस शैक्षणिक संस्थान में हाल-फिलहाल में पढ़े दो-तीन छात्रों से भी जानकारी लें। यह जानकारी ज्यादा व्यवहारिक होगी।

सप्ताह का साक्षात्कार

प्रो .दिनेश अग्रवाल,कुलपति, वाईएमसीए यूनिवर्सिटी, फरीदाबाद

छात्रों को कोर्स चुनते समय कोई सलाह देना चाहेंगे?

-हां, मैं अपने अनुभव से एक बात अवश्य छात्रों से कहना चाहूंगा कि वे हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त अब वैश्विक परिदृश्य के लिए एक या दो और भाषाओं को सीखने का प्रयास अपने इस कोर्स के दौरान करें। फ्रेंच, जर्मन, चाइनीज, जैपनीज भाषा जानने वाले युवकों को कई विदेशी कंपनियां हाथों-हाथ नौकरी देती हैं। इसके अलावा यदि छात्र पढ़ाई के बाद कोई ग्लोबल स्तर पर व्यापार करना चाहता है तो उन्हें भी इन भाषाओं का बड़ा सहयोग मिलता है।